● सुनो और दोहराओ :

३. उपहार

प्रस्तुत कहानी में बताया गया है कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए रुचि और लगन आवश्यक है ।

⁂ चित्र पहचानकर उनके नाम लिखो : **नाम हमारे**

....

एक गाँव में ऋत्विक नाम का लड़का रहता था । वह बहुत गरीब था । गाँव के पास 'पुस्तक मेला' लगा था । उसने माँ से कहा, ''मैं भी मेला देखने जाऊँगा ।'' उसकी माँ बोली, ''देखो, घर में कोई बड़ा नहीं है, तुम अकेले कैसे जाओगे इतनी दूर? बेटा, मेला देखने की जिद छोड़ दो । चलो दूध पी लो ।'' अपनी माँ की बात सुनकर ऋत्विक उदास हो गया और एक पेड़ के नीचे जा बैठा ।

अचानक उसकी दृष्टि दूर पेड़ों के पीछे गई, जहाँ बहुत तेज रोशनी थी । वह उठकर वहाँ गया । वहाँ सुनहरे पंखों वाली एक परी खड़ी थी । ऋत्विक ने हैरान होकर उस परी से पूछा, ''तुम कौन हो ?'' वह बोली, ''मैं परी हूँ लेकिन तुम यहाँ उदास क्यों बैठे हो ?''

परी का प्रश्न सुनकर ऋत्विक की आँखों में आँसू आ गए । वह बोला, ''मैं अपने दोस्तों के साथ पुस्तक मेला देखना और पुस्तकें खरीदना चाहता हूँ ।'' यह कहकर ऋत्विक खामोश हो गया । तब परी बोली, ''इसमें दुख की क्या बात है ? यह समझ लो, तुम्हारी मदद करने के लिए ही मैं आई हूँ । ऐसा मैं तभी करूँगी, जब तुम मेरी परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे ।''

''कौन-सी परीक्षा है ?'' ऋत्विक ने पूछा । परी ने कहा, ''बता दिया तो परीक्षा कैसी ?''

❑ कहानी में आए संज्ञा शब्दों (परी, ऋत्विक, ढ़ेर, ईमानदारी, दूध) को श्यामपट्ट पर लिखें । संज्ञा के भेदों को सरल प्रयोगों द्वारा समझाएँ । उपरोक्त कृति करवाने के पश्चात विद्यार्थियों से इस प्रकार के अन्य शब्द कहलवाएँ । उनसे दृढ़ीकरण भी कराएँ ।

विचार मंथन

।। ईमानदारी चरित्र निर्माण की नींव है ।।

''ठीक है,'' ऐसा कहकर ऋत्विक वहाँ से चला गया । अभी वह कुछ दूर ही गया था कि उसे रास्ते में गिरी हुई एक पोटली मिली । ऋत्विक को यह विश्वास हो गया कि लाल रंग की इस मखमली पोटली में कोई कीमती चीज होगी । उसने उसे खोलना चाहा फिर सोचने लगा । जब यह मेरी नहीं है तो इसे खोलने का मुझे हक नहीं है । ऋत्विक ने पोटली नहीं खोली । तभी किसी की आवाज उसके कानों में पड़ी । ''बेटा, मेरी पोटली गिर गई है, रास्ते में । क्या तुमने देखी है ?''

ऋत्विक ने पूछा, ''किस रंग की थी ?'' ''लाल रंग की,'' राहगीर ने बताया । ''और कोई पहचान बताओ ।'' ऋत्विक ने राहगीर से कहा । ''उसपर एक परी का सुनहरे रंग में चित्र बना है ।'' राहगीर का जवाब था । ऋत्विक ने अपनी थैली से जब वह पोटली निकाली तो उसपर छपा परी का चित्र चमकने लगा । ऋत्विक ने वह पोटली राहगीर को दे दी ।

सुबह उठकर वह वहीं पहुँचा, जहाँ उसे परी मिली थी । देखा तो वहाँ कोई नहीं था । वह बैठ गया। उसकी आँखों के सामने वही लाल रंग की पोटली दिखाई देने लगी । तभी तेज प्रकाश फैला । सामने परी खड़ी थी । परी के दोनों हाथ पीछे थे । परी ने पूछा, '' कैसे हो ?'' ''ठीक हूँ !'' ऋत्विक ने जवाब दिया । तभी परी ने कहा, ''अपनी आँखें बंद करो ! मैं तुम्हें इनाम दूँगी ।'' ''किस बात का ?'' ऋत्विक ने पूछा ।

''तुम उत्तीर्ण हो गए इसलिए ।'' परी बोली ।

परी की बात ऋत्विक की समझ में नहीं आ रही थी । उसने आँखें बंद कर लीं । परी ने उसके हाथों में एक मखमली थैली पकड़ा दी । ऋत्विक ने देखा तो हैरान रह गया । यह तो वही पोटली थी, जो उसने राहगीर को दी थी । परी ने कहा, ''कल मैंने ही तुम्हारी ईमानदारी की परीक्षा ली थी । वह राहगीर भी मैं ही थी इसलिए मैं तुम्हें यह इनाम दे रही हूँ ।''

परी ने ऋत्विक को समझाया, ''ईमानदार व्यक्ति के जीवन में किसी वस्तु की कमी नहीं होती। जाओ ! अब तुम्हें मनचाही वस्तु मिलेगी ।''

ऋत्विक के पास शब्द नहीं थे जिनसे वह परी को धन्यवाद देता । खुशी से उसकी आँखें भर आईं ।

लाल मखमली पोटली ऋत्विक ने अपनी माँ को दी । उसकी समझ में यह नहीं आया कि उसका बेटा उसे क्या दे रहा है । जब माँ वह पोटली खोलने लगी तब

❑ विद्यार्थियों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी सुनाएँ । उनसे कहानी का मुखर वाचन करवाकर नए शब्दों का अनुलेखन करवाएँ। उन्हें वाचन की आवश्यकता, महत्त्व बताएँ । अपने विद्यालय और परिसर के वाचनालय की जानकारी प्राप्त करने के लिए कहें ।

खोजबीन

गृह उद्योगों की जानकारी प्राप्त करो और इसपर चर्चा करो ।

पोटली कई गुना बड़ी हो गई । उसमें से सुंदर-सुंदर पुस्तकें बाहर निकल आईं । पुस्तकों का ढेर देखकर माँ चकित रह गई । माँ के पूछने पर ऋत्विक ने सब कुछ बता दिया ।

अब ऋत्विक ने मित्रों के लिए अपनी बहन कृतिका की सहायता से पुस्तकालय खोला । वहाँ सभी बच्चे आकर अपनी मनपसंद पुस्तकें पढ़ने लगे । उनको पूरा गाँव 'पुस्तक मित्र' के नाम से जानने लगा ।

ऋत्विक ने पुस्तकालय को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया । उसका सारा समय पुस्तकों के बीच

बीतने लगा । एक दिन पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ऋत्विक की आँख लग गई । देखता क्या है कि पुस्तकें उससे बातें करने लगीं । उससे एक पुस्तक ने पूछा, ''ऋत्विक, अगर तुम अपने जीवन में बड़े आदमी बनोगे तो क्या तुम हमारा साथ छोड़ दोगे ? हमें भूल जाओगे?'' ऋत्विक ने कहा, ''नहीं-नहीं, अब तो तुम ही मेरी साथी हो, मित्र हो।'' तभी किसी ने दरवाजे की घंटी बजाई और उसकी नींद टूटी । जागने पर देर तक सोचता रहा कि आगे चलकर वह बड़ा-सा पुस्तक भंडार खोलेगा ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

तेज = प्रखर

हैरान = चकित

पोटली = छोटी थैली

राहगीर = पथिक

मुहावरे

आँखें भर आना = दुखी होना

तय करना = निश्चय करना

चकित होना = आश्चर्य करना

आँख लगना = नींद आ जाना

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द इस कहानी से ढूँढ़कर बताओ ।

सखा

वृक्ष

जननी

नयन

भगिनी

सुनो तो जरा

कार्टून कथा सुनकर उसे हाव-भाव सहित सुनाओ ।

बताओ तो सही

बड़े होकर क्या बनना चाहते हो ?

वाचन जगत से

महादेवी वर्मा का कोई रेखाचित्र पढ़कर उसके पात्रों के नाम लिखो ।

मेरी कलम से

इस कहानी के किसी एक अनुच्छेद का अनुलेखन करो ।

* किसने किससे कहा है, बताओ :

१. ''तुम यहाँ उदास क्यों बैठे हो ?''
२. ''मेरी पोटली गिर गई है रास्ते में।''
३. ''और कोई पहचान बताओ ।''
४. ''नहीं-नहीं, अब तो तुम ही मेरी साथी हो, मित्र हो ।''

सदैव ध्यान में रखो

सच्चाई में ही सफलता निहित है ।

जरा सोचो .... बताओ

यदि तुम्हें परी मिल जाए तो .....

अध्ययन कौशल

किसी परिचित अन्य कहानी लेखन के लिए मुद्दे तैयार करो ।

KJCNR4

स्वयं अध्ययन

दिए गए चित्रों के आधार पर उचित और आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।